चिन्ता हरण कवच

हर चिन्ता को दूर करनें वाला बाबा जी के चिमटे का पाठ

पहले कर गुरू वन्दना सरस्वती को ध्याऊं,
शिव गौरी का लाडला आदि गणेश मनाऊं।
बाबा बालक नाथ जी करना करम अपार,
सबकी चिन्ता हरने वाला करू मैं कवच तैयार।
बोलो जय सिद्ध बालक नाथ बाबा जय सिद्ध बालक नाथ,
आदिकाल में मूल ब्रह्म ने कर दी लीला भारी।
रूप धरा अद्भूत बालक का होके सिद्ध अवतारी,
ब्रह्मा विष्णु शिव शंकर का प्रगटा तेज अपार।
जिस को जग ने जान लिया गुरू दत्तात्रैय अवतार,
दत्तात्रैय को गुरू मान कर हो गये बालक नाथ।
गले मे सिंगी जटा सुनैहरी चिमटा जिन के हाथ,
चिमटे के है आगे बैठे शंकर भोले नाथ।
बीच में विष्णु पीछे ब्रह्मा लिये कमण्डल हाथ,
ब्रह्मा विष्णु शिवजी का चिमटे मे तेज समाया।
इस चिमटे ने हर युग में भगतों का मान बढ़ाया,
तीन लोक की शक्ति है चिमटे मे आन समाई।
शाह तलाईयां में चिमटे ने अपनी कला दिखाई,
चिमटे के है अक्षर तीन, तीन है इस के भाग।
सभी देवता इसमें बैठे लिए स्नेह अनुराग,
तीनकाल और तीन दोष में चिमटा देत सहारा।
तीन दुखों से करता रक्षा ये सिद्ध कवच प्यारा,
च से चरण कमल की भक्ति भगतो को है प्यारी।

म से मोर सवारी करते बाबा पौणाहारी,
ट से टिमटिमाता धूना सब को पार उतारे।
चिमटा हाथ ले गऊ सेवा में बारह बरस गुजारे,
सत रज तम के गुणो का है चिमटे में भरा भण्डार।
चिमटा कवच है सब भगतो का करता बेडा पार,
इस चिमटे को देखने अरशों से देवता आये।
बाबा तेरे चिमटे से गुरू गोरख भी घबराये,
औलख शब्द के जपने से चिमटा आन बचाये।
चिन्ता रोग बिमारी से भगतो की करे सहाये,
काम क्रोध मद लोभ से करता रक्षा आप।
मनोकामना पूर्ण करता करे जो इस का जाप,
जादू टोना छाया बन्धन सबको चिमटा तोड़े।
चिन्ताहरण कवच का पाठ बाबे के संग है जोड़े,
भूतप्रेत पिशाचनी जन्त्र मंत्र वार।
चिन्ताहरण कवच है करता रक्षा बारम्बार,
चिन्ताहरण कवच के अन्दर चिमटे की अद्भूद शक्ति।
रोग सोग सन्ताप मिटावे सिद्ध योगी की भक्ति,
चिमटे के है अन्दर बैठे ब्रह्मा विष्णु महेश।
नित नेम जो इसका करता, मिटते सभी कलेश,
चिन्ताहरण कवच योगी का, करता चिन्ता दूर।
निसदिन जो जन पढ़ता रहता अन्न धन से भरपूर,
इस चिमटे के पाठ से होता कवच तैयार।
इसी कवच के आसरे जीव उतरें भव से पार,
बाबा जी के चिमटे का जो भी करता ध्यान।

भक्ति शक्ति मुक्ति का देता ये वरदान,
तीनकाल और तीन लोक में चिमटे का आधार।
करे पाठ जो चिमटे का हो उसका बेडा पार,
चिन्ताहरण कवच का करता जो चालीस दिन पाठ।
उसके सिर पर रखते है सिद्ध बाबा अपना हाथ,
सिद्ध योगी तेरा दास हूं मुझको आन बचाना।
मोह माया से करना रक्षा अपने चरणी लाना,
चमचम, चमचम, चिमटा चमके बाबा तेरे हाथ।
नमस्कार तुझको करूं सिद्ध बाबा बाालक नाथ,
हुक्म आपका मानकर भगत ने लिख दिया पाठ।
जो भी पढ़े इस पाठ को उसके सिर रखना हाथ।

।। बोलो जय सिद्ध बालक नाथ।।
।। बोलो जय सिद्ध बालक नाथ।।

।जय सिद्ध बालक नाथ की।।
।।जय सिद्ध बालक नाथ जी।।